फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 113 नवम्बर 1997

Published

Reflections on Marx's Critique of Political Economy

Reprinted

a ballad against work

The books are free.

खुशी की बात

बरसों से हमारी इच्छा-प्रयास-उम्मीद रही है कि यह अखबार मजदूरों के बीच अनुभवों और विचारों के आदान-प्रदान का एक जरिया बने। यह बताते हुये हमें बहुत-ही खुशी हो रही है कि इस बार के अखबार में छुट-पुट नुक्तों के सिवा हमें कुछ भी नहीं लिखना पड़ा है। दोस्तो यह अंक तो ट्रेलर है।

आदत है इसलिये कुछ कहेंगे।

समाज सुधारक के प्रवचन चल रहे थे। फरीदाबाद टाउन में चल रही प्रवचन सभा में तीसरे दिन एक अनजान लड़की ने खड़े हो कर समाज सुधारक से कुछ सवाल पूछे। झालानी टूल्स के सड़कों पर गत्ते लिये मजदूरों का जिक्र करके लड़की ने कहा कि यह जान कर दिल को ठेस लगती है कि मजदूरों को 18 महीनों से तनखा नहीं दी गई है। पूछा : मजदूरों की समस्या का समाधान क्या है? समाज सुधारक हड़बड़ा गये।

यह एक उदाहरण है उन प्रभावों का जो सात-आठ मजदूरों की मात्र एक टोली द्वारा पैदा किये जा रहे हैं। पाँच-पाँच, सात-सात मजदूरों की 25-50-100-200 टोलियाँ गत्तों के साथ सड़कों पर खड़ी हो जायें तो कितने भरोसों पर कितने सवालात उठ खड़े होंगे। मैनेजमेन्टों की खाट खड़ी....

अप्रेन्टिस वरकर

हम आल अप्रेन्टिस इस अखबार के जरिये सरकार के अफसरों, आई टी आई डायरेक्टर और मैनेजमेन्टों को यह बताना चाहते हैं कि ट्रेनि के नाते हमें जो पैसे मिलते हैं वे ना के बराबर हैं – मात्र 800 रुपये प्रतिमाह। हम अप्रेन्टिस दूसरे जिलों से और गाँवों से आते हैं और यहाँ पर आ कर हमें कमरे तथा खाने-पीने का इन्तजाम खुद करना पड़ता है। फरीदाबाद में 550 रुपये प्रतिमाह से कम में ढँग का कमरा भी नहीं मिलता और फिर खाने-पीने का इन्तजाम। आप खुद ही अन्दाज लगायें कि 800 में क्या-क्या हो सकता है।

दूसरी तरफ, हम कम्पनी में जाते हैं तो वहाँ पर मैनेजरों व सुपरवाइजरों के साथ प्रोडक्शन देने पर झगड़ा होता है। यहाँ तक की धमकी दी जाती है कि अगर पूरी प्रोडक्शन नहीं दोगे तो ट्रेनिंग के बीच में ही निकाल दिया जायेगा। कई अप्रेन्टिसों के साथ मैनेजमेन्ट वाले गाली-गलौज करते हैं जो कि नहीं होना चाहिए।...

आयशर कम्पनी में तो अप्रेन्टिस वरकरों को बहुत ही तंग किया जाता है। हम फरीदाबाद अप्रेन्टिस प्रिंसिपल से मिले तो उनका जवाब भी यही है कि प्रोडक्शन तो देनी ही पड़ेगी। पता नहीं साहब को कम्पनियों की तरफ से क्या मिलता है जो कि हमें दबाते हैं।

हमारी सरकार से माँग है कि हमारा स्टाइपेन्ड बढा कर 1500 रुपये प्रतिमाह करना चाहिए.... अगर कम्पनी में पूरी प्रोडक्शन लेते हैं तो उसी हिसाब से पैसा मिलना चाहिए। एक अप्रेन्टिस को 8 घन्टे थकान-भरा काम करने पर मात्र 26 रुपये मिलते हैं जो काम को देखते हुये बहुत ही कम हैं.... अप्रेन्टिस वरकरों पर काम का लोड नहीं डालें और दबाने की कोशिश न करें ताकि हम अपनी ट्रेनिंग पूरी करके अपनी आगे की जिन्दगी के बारे में सोच सकें।....

21 अक्टूबर 97 – **आल अप्रेन्टिस फरीदाबाद**

व्हर्लपूल के मैनेजिंग डायरेक्टर का नोटिस

समस्त कामगारों को सूचित किया जाता है कि प्रबन्धकों ने कुछ कामगारों की शिकायत यूनियन के सम्मुख रखी जो इस प्रकार से है, जैसे –शराब पी कर कम्पनी में आना, रात में सो जाना, अपने कार्यस्थल से गायब रहना, कार्यस्थल पर लेट जाना, बिना बताये ज्यादा छुट्टियाँ करना।

दोस्तो हमने आपको यही बताया कि कम्पनी का भविष्य ही हमारा भविष्य है, हमारे परिवार का भविष्य है। इस कम्पनी की सफलता हमारी सफलता है। इस कम्पनी को (उच्च्कोटि) ऊँचे स्तर तक पहुँचाना ही हम सभी का कर्तव्य बनता है। इस काम के लिये हमें अपने कामगारों का पूरा सहयोग दिल से चाहिये। आपके सहयोग, मेहनत व अनुशासन से ही यह कम्पनी चल सकती है, हमारे देश में अपना स्थान बना सकती है। अगर आप लोगों का सहयोग नहीं रहा तो हमारी कम्पनी का क्या होगा, ये कोई नहीं जानता, और ऐसा कोई भी कामगार दिल से नहीं चाहता। हम सभी की धारणा है कि हमारी कम्पनी खूब चले, क्यूँ कि इस समय बाजार में कई फ्रिज बनाने वाली कम्पनी आ चुकी हैं।

अर्थात हम उन कामगार साथियों से तह दिल से विनती करते हैं, जो निम्नलिखित बातों के तहत चलते हैं वो इस प्रकार से न करें। अपने अनुशासन में रह कर अपनी इमानदारी से अपना कार्य करें व अपनी डियुटी करें ताकि आने वाले समय में हम सबका भविष्य उज्जवल बन सके।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप लोग कम्पनी व अपना भविष्य को देखते हुये अपना पूरा उत्पादन व अनुशासन कम्पनी को दोगे ताकि आप और हम परेशानियों से बच पायेंगे।

नोट – 220, 310 फ्रिज की आज बाजार में अत्याधिक माँग है इसलिये आपसे अनुरोध किया जाता है कि इस माँग को देखते हुये जो भी दिल से बढोतरी हो सकती है, आप जरूर बढोतरी करेंगे। इसके लिये आपका सहयोग अति आवश्यक है।

आप लोगों का धन्यवाद

प्रधान हैमचन्द, महासचिव मोहन सिंह बिष्ट और यूनियन के छह अन्य लीडरों के हस्ताक्षर।

9 अक्टूबर को व्हर्लपूल फैक्ट्री के गेटों पर थोक में चिपके इस नोटिस को पढ कर इसकी सामग्री के आधार पर हमने शीर्षक दिया है। लेकिन वास्तव में यह व्हर्लपूल यूनियन लीडरों का नोटिस है। तथ्य ... अकाट्य तथ्य ... मैनेजिंग डायरेक्टर और यूनियन लीडरों की भाषा एक है।

पूना के पास 350 करोड़ रुपये में नई फैक्ट्री बना रही व्हर्लपूल कारपोरेशन और व्हर्लपूल इंडिया लिमिटेड ''घाटा हो रहा है'', '' घाटा हो रहा है'' के नगाड़ों के बीच नूरा कुश्ती कर रही हैं। यूनियन लीडर मदारी बने हैं।

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

छोटू गुस्ताख बना चार्जहैन्ड

परेशानियाँ इतने दबे पाँव आई कि मुझे पता भी नहीं लगा। गिला किस से करूँ आखिर ये सब मेरी अपनी ही बुलाई हुई तो थी। मैं एक मेहनती और पुराना मजदूर था। न जाने कितनों को हाथ पकड़ कर काम करना सिखाया था। सभी मुझे इज्जत से उस्ताद या गुरू जी कहते थे।

एक बार हमारी कम्पनी में एक बेहद खुर्राट और दबंग शॉप इन्चार्ज कुकरेजा साहब का आगमन हुआ। फिर तो काम, काम और केवल काम। दो मिनट में चाय पिओ और टोकन ले कर मूतने जाओ, यानि, धारा बहाने पर भी धारा। छुट्टी, लन्च, शिफ्ट की शुरुआती बेल से पाँच मिनट पहले भी बेल बजने लगी। वरकरों के साथ उनकी मुठभेड़,वादविवाद, बकबक के बाद सिलसिला वार्निंग, चार्जशीट, सस्पैन्ड तक आ गया। एनुअल इन्क्रीमेंट रोके गये; प्रत्येक वरकर को अपनी नौकरी धार पर लगने लगी। वरकर ही नहीं सुपरवाइजर्स तक को शॉप में झाड़ा जाता, माइयावे -बहणयावे जैसे अपमानजक शब्दों को सुनना पड़ता।

एक दिन एक अर्जेन्ट काम अटक गया। सुपरवाइजर्स समझ नहीं पाये कि कैसे होगा। मैंने जैसे-तैसे जुगाड़ लगा कर उसे किया। शायद तभी से मैं और मेरा काम उस व्यक्ति की नजरों में आ गया था। दसेक दिन बाद मुझे उसने अपने केबिन में तलब किया। मैं डरते-डरते वहाँ पहुँचा तो केबिन के अन्दर दूसरे डिपार्ट का मेरा एक साथी मुकुन्द था। साहब उसके साथ हँस-हँस कर बातें कर रहे थे। मुझे ताज्जुब हुआ.... आखिर मैंने रावण को पहली बार हँसते हुये देखा था। मुकुन्द के केबिन से जाने के बाद मैं अन्दर पहुँचा। साहब ने नजरें उठाई...

" आर यू के. के. जैन? "

"यस सर।"

"प्लीज टेक ए सीट" साहब ने कहा तो मैं चौंका।

" भई लगता है ये जैन लोग मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे। मेरी पिछली कन्सर्न में एक वरकर था भुवनेश्वर जैन। कमाल का वरकर था। किसी भी प्राब्लम का सोल्युशन उसके पास पहले से हाजिर रहता था। मेरे इन्जीनियर उसके सामने कुछ नहीं थे। उसके रहते हमने कभी चिन्ता नहीं की। पहले मैंने उसे चार्जहैन्ड बनाया फिर सीनियर चार्जहैन्ड ... सुपरवाइजर तक उसे पहुँचा दिया था मैंने। इस साल उसे जुनियर इन्जीनियर रिकमेंड करा लेता लेकिन ... खैर छोड़ो ... आपकी क्वालिफिकेशन और एक्सपीरियन्स क्या है?" कहते हुये वे मेरे बारे में बात करने लगे।

अब मैं मुकुन्द की तरह ही उनसे खुल कर बातें कर रहा था। साहब ने कहा, " मैंने अक्सर देखा है तुम हर वक्त सिर झुकाये बस अपने ही काम में मगन रहते हो। भई कभी-कभार सिर उठा कर जरा और लोगों का काम भी देख लिया करो। कहीं कोई प्राब्लम हो तो जरा अटैण्ड किया करो। इन्जीनियरिंग की पढाई, मेरा मतलब किताबी नालेज तो फील्ड में आते ही धरा रह जाता है – वहाँ तो तुम जैसों का एक्सपीरियन्स ही काम आता है। और लोगों को भी समझाओ जरा। हर समय डाँटना, सजा देना हमें अच्छा नहीं लगता। हम उनकी भावनाओं और जरूरतों को समझते हैं लेकिन क्या करें कुन्तल, ये सीट ही ऐसी है। वैसे अगर किसी को कोई प्राब्लम हो तो हमें उनके काम आते हुये काफी खुशी होगी।"

यह सब सुन कर मुझे लगा साहब हम में से ही एक हैं। अपने ऊपर एक अजीब-सा प्रभाव लिये मैं वापिस आ गया। उसके बाद तो साहब या उनके इन्जीनियर, सुपरवाइजर किसी वरकर से बात करते या कोई प्राब्लम डिस्कस करते तो मैं भी वहाँ मौजूद रहता। वरकरों से मेरी डीलिंग बढ गई। सभी खुश थे इस नये परिवर्तन से। काम भी बढ गया था।

एक बार कम्पनी के एक खुर्राट, गले की हड्डी कहलाने वाले वरकर बैरागी को नाइट शिफ्ट में चोट लगी। दूसरे दिन ग्यारह बजे मुझे बुला कर काफी झाड़ा गया :

"जिस बात का पता मुझे सबसे पहले लगना चाहिए, अब लग रहा है। मेरे लिये मेरा वरकर कीड़ा-मकौड़ा नहीं, मेरा अपना हाथ है। झगड़ालू आदमी हमेशा लापरवाह होता है – अब लगा ली न अपने आप को चोट, किसी का क्या बिगड़ा। खैर, अब लापरवाही न करे। ई एस आई के चक्करों में न पड़ कर प्राइवेट इलाज करवाये और ठीक हो कर जल्द आये। उसके बिना अच्छा नहीं लगता। आखिर नहीं से तो मरखना बैल अच्छा होता है।" कहते हुये साहब ने कुछ रुपये दे कर एक वरकर को ऑफिसियल गेट पास पर बैरागी के घर भेजा। और उस घटना के बाद बैरागी एकदम बदल गया था।

एक दिन हमारे चाय पीते वक्त साहब आ कर स्टूल पर बैठ गये। " थोड़ी चाय दो यार।" हमें हैरानी हुई। " अरे यार तुम लोगों की चाय तो स्टाफ की चाय से भी बढिया है", साहब चाय पीते हुये बोले थे।

एक पुराने वरकर माँगे राम की लड़की की शादी पर साहब बिना बुलाये घर पूछते-पूछते पहुँच गये। सभी हैरान। माँगे राम को प्यार भरी झिड़की मिली, " हमें गैर समझते हो।"

एक साल बाद मुकुन्द, देवाराम, शिव सिंह और मैं, इन चारों आदमियों को चार्जहैण्डशिप का लैटर और चालीस रुपये उसका अलाउन्स मिला। उसी दिन शाम को सैलीब्रेशन पार्टी हुई। अन्य सभी के लिये जल्द ही कुछ करने का वायदा कुकरेजा साहब ने किया। बदले में साहब ने दो छोटे-छोटे सहयोग हम से माँगे : अपनी मशीनों को हम दूसरी शिफ्ट के अपने रिलीवरों के हाथों में सौंपने तक चलायेंगे और नाइट ड्युटी भी दिन की तरह आठ घन्टे की ही होगी। इससे अतिरिक्त प्रोडक्शन 280 क्रेन ट्रालियों से बहुत कम बढा कर 300 की गई। विरोध करने वाला कोई नहीं था।

दो महीने बाद साहब ने हमें बताया कि मैं डायरेक्टर साहब से तुम्हारे बच्चों के लिये एजुकेशन ग्रान्ट माँगने जा रहा हूँ। इस खुशी में हमने अपनी प्रोडक्शन सवा तीन सौ क्रेन ट्राली करने की सहमती दे दी। चार महीने की टाल-मटोल के बाद जब उक्त ग्राण्ट आई तो हमारे हाथों के तोते उड़ गये : पहली से चौथी क्लास तक के दो बच्चों के लिये पन्द्रह रुपये महीने, पाँचवी-छटी क्लास के लिये बीस रुपये महीने, सातवीं-आठवीं के लिये पच्चीस और नवीं तथा दसवीं क्लास के लिये तीस रुपये महीने। एक-दो साथियों के विरोध करने पर कहा गया : " यह सब तुम लोगों को बिना माँगे मिला है और फिर यह कोई लिमिट नहीं है। एक बार शुरुआत तो होने दो।" अगले दिन सुबह जो एजुकेशन ग्रान्ट बँटा वह अगले चार महीनों का था जबकि पिछले चार महीनों से हम मर-खप रहे थे।

पन्द्रह दिन बाद कुकरेजा साहब ने बताया, "लो तुम्हारे लिये एक बहुत बढिया मार्जिन और कमाई वाला जॉब आया है। अभी केवल दो लेथ मशीनों पर ट्रायल बेसिस पर चलेगा। और हाँ, क्रेन ट्राली की प्रोडक्शन लॉस न हो इसके लिये बाकी की नौ मशीनें कुछ दिनों के लिये इन दो मशीनों का काम भी सम्भालेंगी।" मैंने कुछ बोलना चाहा तो साहब बोले, " एक बार ये आर्डर मिल गया तो समझो कमाई-ही-कमाई। आप लोगों को भी हिस्सा मिलेगा।" हमारे सपने एक बार फिर रंगीन होने लगे थे।

आठ-नौ दिन बाद ही कुकरेजा साहब बोले, "कुन्तल ये क्रीक एक्सल वाली मशीनें कुछ स्लो चलती हैं क्या ?"

"नहीं सर वो..."

"क्या वो-वो... इस हिसाब से तो एक महीने में पचपन सौ भी नहीं निकलेगा। मशीन कॉस्ट भी नहीं निकल रही है, रोज के चार पीस रिजैक्शन। क्या जवाब दूँ मैं प्रोडक्शन मैनेजर को कि ये आर्डर हम पूरा नहीं कर सकते ! दस हजार पीस पर मन्थ का आर्डर है .... अब क्या करूँ तुम लोगों का ? फिर मुझे दोष दोगे तुम।"

" हम कोशिश करेंगे सर।"

"कोशिश ? वॉट कोशिश ? कर लिया तुमने। तुम लोग केवल बातें कर सकते हो। जाओ और क्रीक एक्सल के लिये एक मशीन और इंगेज कर लो। और सुनो, क्रेन ट्राली की प्रोडक्शन मैनेज करनी पड़ेगी।... जाओ अब खड़े क्या हो। ये क्रीक एक्सल तो लगता है मेरी नौकरी खायेगा।"

दो दिन बाद। " और सुनाओ यार। आजकल तो तुमसे बात करने का मौका नहीं मिलता। एजुकेशन ग्रान्ट बँट गई क्या?"

"अभी नहीं सर।"

" अभी नहीं क्या मतलब? खैर मैं बात कर रहा हूँ। कह रहे हैं कुछ फाइनैंशियल प्राब्लम हैं और फिर दिवाली आ रही है। इस बार तुम लोगों को अच्छा-सा गिफ्ट रिकमैण्ड करा कर रहूँगा। और मिठाई तो इस बार बरफी दिलवाऊँगा।" यह सब सुन कर हम लोगों की बाछें खिल गई।

अगले ही दिन शाम को चार आदमी तलब किये गये। "देखो, अगर तबियत ठीक नहीं है तो छुट्टी ले लो.... लेकिन तीन दिन से ग्यारह क्रेन ट्राली?"

"सर वो एक और मशीन पर क्रीक एक्सल चालू किया गया था। अब बाकी आठ मशीनों पर...."

"बहुत ठीक ! मतलब ये कि आठ मशीनों पर एक मशीन का काम मैनेज नहीं हो सकता ! और क्रीक एक्सल तीन मशीनों पर सिर्फ 340 – मेरा दिल कह रहा है अपने बाल नोंच लूँ। पूरे दिन लैटरिन में बीड़ी पीते हो ! काम की परवाह किसी को नहीं। सात तारीख को कहते हो पेमेन्ट क्यों नहीं है, पूरे महीने मेहनत की है। देखो समझा रहा हूँ मैं, सीधी तरह से बाज आ जाओ... वरना तुम लोगों के बीड़ी-माचिस गेट पर रखवा दूँगा। सब कुछ बरदाश्त कर सकता हूँ.... प्रोडक्शन लॉस नहीं ! आखिर मुझे भी ऊपर जवाब देना पड़ता है।"

अगले दिन खुशखबरी के नाम पर एक बिजली और गिरी : क्रीक एक्सल वाली मशीनें लन्च में भी चला करेंगी ! और लन्च टाइम के आठ रुपये की हड्डी हम तक फेंकी गई। यह केवल क्रीक एक्सल मशीन आपरेटरों के लिये था। दिवाली पर मिठाई में आधे लड्डू और आधी बरफी थी, वह भी फफूँदी लगी हुई। और गिफ्ट के नाम पर एक छोटा-सा थरमस था।

दिवाली के बाद इन्सपेक्शन डिपार्ट से चार आदमियों का हिसाब हुआ। नई भरती तक साहब ने एक नया कॉपरेशन हम से माँगा कि हम अपने बनाये माल का खुद इन्सपेक्शन करेंगे। इन्सपेक्शन अलाउन्स चालीस रुपये महीना। उस समय समूचे इण्डस्ट्रियल एरिया में टी क्यू एम की लहर थी। यानि, हमें मात्र 40 रुपये दे कर मैनेजमेन्ट ने अपने 12000 रुपये बचा लिये – इसे कहते हैं प्याज के छिलके पर मुसलमान।

कुछ दिन बाद क्रीक एक्सल वाली मशीनों पर 125 पीस के बाद रुपया पीस के हिसाब से इन्सेंटिव की घोषणा हुई। इस नयी व्यवस्था से सौ-सवा सौ का इन्सेंटिव मिलने लगा। उस दिन मैं नाइट शिफ्ट में था। एक वरकर मंगल के, जिसे मैंने ही काम सिखाया था, चोट लग गई। मैंने उसके लिये बाहर आदमी भेज कर हल्दी वाला दूध मँगवाया और दो घन्टे का रैस्ट दिया। अगले दिन कुकरेजा साहब ने मुझे बुलाया :

" दो घन्टे रैस्ट का मतलब जानते हो? इतनी पावर तो मेरी भी नहीं है। अगर तुम ठीक से काम करना चाहते हो तो करो वरना मेरे पास और भी आदमी हैं।"

"सर, मंगल को चोट लगी थी।"

" उसे ई एस आई क्यों नहीं भेजा? अगर उसे कुछ हो जाता तो? तुम तो कम्पनी पर क्लेम कर देते। और फिर, मैं केवल प्रोडक्शन लॉस की बात कर रहा हूँ। दो घन्टे का रैस्ट ! यहाँ हमारा रिश्ता काम का है। मानवीय रिश्तों, भावनाओं की यहाँ कोई जरूरत नहीं है।"

" ठीक है सर, मुझ से गलती हो गई।" कह कर मैं वापिस आया। मैंने चार्जहैण्डशिप से रिजाइन लिखा और बिना कुछ बोले, साहब की मेज पर जा रखा।

" इसका मतलब?" साहब ने मेरी ओर देखा।

" इसका मतलब यह है सर कि मैं आपके चालीस रुपये के बदले रोज अपना एक घन्टा एक्स्ट्रा देता हूँ। यानि, सवा रुपया रोज और जिम्मेदारी पूरी शिफ्ट की। और उसके बाद भी मैं इन्सानी फर्ज भूल जाऊँ ! जिम्मेदारी के लिये आप हैं, इन्जीनियर हैं, सुपरवाइजर हैं।"

" लेकिन कुन्तल तुम एक सीनियर वरकर हो, स्टाफ के हो, मेरे अपने आदमी हो।" कहते हुये साहब का लहजा नरम था।

" स्टाफ का आदमी और मैं?" मैंने एक फीकी-सी हँसी के साथ कहा, "स्टाफ को मिलने वाली सुविधायें मुझे नहीं मिलती। क्रीक एक्सल प्रोजेक्ट के शुरुआत की खुशी में हर स्टाफ मेम्बर का 500 रुपये का इन्क्रीमेन्ट हुआ था, मेरा नहीं हुआ ! अजीब रूल है। काम करवाने को तो मैं स्टाफ हूँ, कुछ मिलने की बात हो तो मैं सामान्य मजदूर भी नहीं ! मैं चार्जहैन्ड बन कर धोबी का कुत्ता बन गया। मैं केवल काम का जिम्मेदार नहीं बन सकता। जिनसे मैं काम लेता हूँ उनके प्रति मेरी सभी जिम्मेदारियाँ बनती हैं। छह महीने पहले आपने दो सुपरवाइजर्स की छुट्टी कर दी। उनका काम भी मैं और मुकुन्द संभाल रहे हैं। पिछले साल से प्रत्येक वरकर पर वर्क लोड काफी अधिक बढ गया है। ऐसे में किसी को चोट लगना सामान्य बात है। फर्स्ट एड तक का इन्तजाम नहीं है। आपकी प्रोडक्शन लॉस तो होगी ही। अब हम लोग जानबूझ कर तो चोट लगाते नहीं।"

" कुन्तल प्लीज ! यह सब अब बता रहे हो जबकि इन सब बातों का समय नहीं है। तुम्हारी सब बातें सुनूँगा। सोल्युशन है। एक-दो आदमी रख सकते हैं हम। अगर तुम्हारा कोई आदमी हो तो... लेकिन कुछ दिन ठहर कर, अभी हालात सही नहीं हैं। तुम्हें पता है क्रीक एक्सल वाली पार्टी अपना आर्डर कैंसिल करके कहीं और से बनवाना चाह रही है। अगर ऐसा हुआ तो तुम लोगों का इन्सैंटिव, ओवर टाइम सब बन्द। उल्टे मेरे पास नौ आदमी फालतू हो जायेंगे। अब कम्पनी किसी को बैठा कर तो तनखा देती नहीं। खैर मैं कोशिश कर रहा हूँ कि आप लोगों की रोजी-रोटी चलती रहे। इस वक्त कुछ मत सोचो। बस चुपचाप काम किये जाओ। मुझे पार्टी के पास बॉम्बे जाना है। देखें क्या होता है।"

कुकरेजा साहब की बातों पर मैं अवाक था। स्थिति काफी विकट थी। मैं अपना रिजाइन उठा कर चला आया। बाहर आ कर मैंने सब को बताया तो सब को साँप सूँघ गया।

चार दिन बाद जब कुकरेजा साहब बॉम्बे से लौटे तो उन्होंने बताया : "पार्टी का कहना है कि महीने के 10 हजार नहीं बल्कि 15 हजार एक्सल चाहियें वरना वो पार्टी आर्डर किसी और को दे देगी। मैंने किसी तरह उन्हें 12 हजार पर मनाया है। बाकी मुकुन्द और तुम सम्भाल लेना।"

"लेकिन सर, इतना ज्यादा...."

"भई पूरे महीने में दो हजार एक्सल ही तो अधिक देने हैं।"

"लेकिन सर, हमारे पास टूलिंग प्राब्लम है। पुरानी मशीनरी और मेजरिंग इन्सट्रूमेन्ट..."

"कुन्तल–कुन्तल, ये समय प्राब्लम बताने का नहीं है। कम्पनी के सामने समस्या है बहुत बड़ी... बिजली का पिछले महीने का 22000 का बिल है, इस बार के कन्साइनमेन्ट की एक्साइज ड्युटी जमा करनी है..."

"लेकिन सर, टूलिंग प्राब्लम के विषय में पहले भी मैंने आप को कई बार बताया है।"

"ओ के.... ओ के। कुछ दिन और ठहरो।"

"लेकिन सर 12000 एक्सल की प्रोडक्शन..."

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। ये आर्डर मुझे कम्पलीट चाहियें।"

"मिल जायेगा सर ! लेकिन एक चीज तो आप को हर सूरत में मँगानी ही होगी।"

"ओ के। बोलो क्या? केवल एक बोलना।"

"एक कोल्हू सर जिसमें आप हम सब को पेर सकें।"

और मैं उस दिन शाम तक सस्पैण्ड हो चुका था।

– आपका कुन्तल कुमार जैन उर्फ छोटू गुस्ताख

रेमिंग्टन में भी वर्क सस्पेन्ड

मे. रेमिंग्टन रैण्ड, प्लाट–3 सैक्टर–6 फरीदाबाद, के द्वारा श्रमिकों को माह मई 97 से अब तक करीब 6 माह का वेतन भुगतान नहीं किया गया है। इस सम्बन्ध में श्रम विभाग में सभी स्तर पर शिकायत-पत्र दायर कर चुके हैं।

ता. 19.10.97 को साप्ताहिक अवकाश के दिन रात्रि 7.30 बजे स्थानीय प्रबन्धकगण करीब 12 गुण्डे ले कर अन्दर आये और कार्य पर तैनात साथियों को धमकियाँ, हाथापाई आदि कर गेट के बाहर जबरदस्ती कर दिया। प्रबन्धकगण के साथ गुण्डे हथियारबन्द थे जिनमें एक विशेष पहचान के एक सरदार जी थे जिनके हाथों में पिस्तौल था। इस सम्बन्ध में उपस्थित साथियों ने पुलिस चौकी में सूचनायें दी। पुलिस इस सम्बन्ध में कोई कार्रवाई करने में आना-कानी कर रही है। प्रबन्धक ने एक नोटिस द्वारा सभी कार्य स्थगन कर श्रमिकों को गेट बाहर रोक दिया है।

20.10.97 — रेमिंग्टन इम्पलाइज यूनियन की प्रेस विज्ञप्ति

रेमिंग्टन में कार्यरत मजदूरों को कुछ सुझाव : झालानी टूल्स में कार्यरत मजदूरों ने देर से, रुक-रुक कर और झिझकते हुये पाँच-पाँच, सात-सात की टोलियों में छोटे-छोटे कदम उठाये हैं जिनका असर दीखता है। रेमिंग्टन में कार्यरत मजदूर बिना देरी किये तत्काल बीस टोलियों में बँट कर दो-तीन हफ्ते हर रोज

● गत्तों पर अपनी बातें लिख कर हर रोज सुबह की शिफ्ट के समय 20 सड़कों पर खड़े हो कर अन्य मजदूरों को अपनी बातें बतायें;

● गत्ते लगाने के बाद हर टोली अलग-अलग से डी.सी. तथा डी.एल.सी. से मिले और लिख कर व जबानी हर रोज अपनी बातें इन साहबों को कहे ;

● हर रोज शाम को फुर्सत से प्रत्येक टोली दिन-भर की घटनाओं का जायजा ले और अन्य टोलियों से आदान-प्रदान करने के तरीके ढूँढे ;

यह तीन छोटे-छोटे कदम लगातार उठायें तो मैनेजमेन्ट के वर्क सस्पैन्ड उर्फ तालाबन्दी के हमले को फेल कर देंगे।

हिन्दुस्तान स्पोर्ट, लुधियाना

थापर बिल्डिंग, गिल रोड़,लुधियाना स्थित दो फैक्ट्रियों, हिन्दुस्तान स्पोर्ट प्रा. लि. अते हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीज के तीस मजदूरों को 29.9.97 को बगैर कोई कारण या नोटिस दिये गेट पर रोक दिया गया और अन्दर नहीं जाने दिया गया। मजदूरों ने अन्दर जाने की कोशिश की तो मालक ने स्टाफ से पाँच सिक्योरटी गार्डों को बुला कर गुण्डागर्दी पर उतारू हो गया और हाथापाई भी हो गई। उसी दिन से मजदूरों ने हड़ताल कर दी। मजदूरों ने 5.10.97 को बसन्त पार्क में अपनी मीटिंग मोल्डर एण्ड स्टील वरकर्ज यूनियन के साथ में रखी और कम से कम 300 मजदूरों को साथ ले कर रैलियाँ मार्च किया। इसके बाद से मजदूर प्रत्येक दिन गेट पर डण्डा-झण्डा ले कर धरना और जिन्दाबाद एवं मुर्दाबाद के नारे लगा रहे हैं। 12.10.97 को 300 मजदूरों ने गेट रैली एवं सियापा किया। 14.10.97 को शाम आठ बजे जलती मशालें और झण्डे ले कर विशाल मार्च किया। 17.10.97 को कम से कम 350 मजदूरों ने अपना विशाल मार्च ले कर डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर पर रोष प्रकट किया एवं अपना माँग-पत्र दिया। मोल्डर एण्ड स्टील वरकर्ज यूनियन के प्रधान साथी विजयनारायण एवं सहायक सैक्रेट्री साथी पूर्णमासी तथा भाईचारा संगठन पँजाब इन्डस्ट्रीयल वरकर्ज यूनियन, जमहुरी अधिकार सभा पँजाब, डेमोक्रेटिक टीचर्ज फ्रन्ट, तर्कशील सोसाइटी पँजाब, नेपाली एकता समाज, पूर्वान्चल वेल्फेयर एसोसियेशन आदि के नेताओं ने हर प्रकार की मदद का एलान किया है। हड़ताल जारी है।

17.10.97 — **ए.के. सिंह,** लुधियाना

टिप्पणी : इस रिपोर्ट से और औद्योगिक क्षेत्रों के माहौल से दिखता है कि मैनेजमेन्ट ने स्वयं तालाबन्दी करने की बजाय हड़ताल के लिये उकसाया है। मैनेजमेन्ट की कोई नई पालिसी है जिसे लागू करने की कोशिश में यह किया गया है। कुरेद कर देखना बहुत जरूरी है।

खान मजदूर खानक – 3

मरता क्या नहीं करता के तहत खानक के खान वाले कर्मिक 3 जून 97 से निरन्तर व्यवस्था के तीनों अंगों से सीधी टक्कर ले रहे हैं। जब साम-दाम-दण्ड-भेद की सभी चाणक्य नीतियाँ असफल हो गई तो न्यायपालिका ने ठेकेदारों के पक्ष को उचित ठहराते हुये मजदूरों को तुरन्त बेदखल करने के आदेश दिये।

आदेश तो दिये परन्तु बिल्ली के घण्टी बाँधे कौन?

बीड़ा उठाया भाड़े के गुण्डों ने और वो भी प्राणरक्षा हेतु पूँछ दबा कर और थोड़ी मूँछ कटवा कर ऐसे भागे कि ढूँढे नहीं थ्याये। उनके पीछे भागे ठेकेदार और फिर भागे नम्बरदार। पुलिसवालों ने तो प्राणरक्षा के बदले अपने हथियार देने भी स्वीकार कर लिये। किसी के समझ में नहीं आया कि न्यायालय की आज्ञा की पालना करें भी तो कैसे।

जन - मत का आधार टूटते देख श्री-श्री मुख्य कमान महोदय ने प्रिय पुत्र के साथ घर-घर सम्पर्क का अभियान चलाया।

औरतों, बच्चों व बुजुर्गों के एक लम्बे जलूस ने जिला मुख्यालय का कामकाज ठप्प किया तथा जब उससे भी काम न चला तो 24 सितम्बर को बिना भाड़े की रेल से रेला पहुँचा मुख्य कमान के मुख्य दरबार चण्डीगढ।

दूसरी तरफ श्रीमान जी अपना कब्जा कायम करने पहुँचे उनके घर, यानि जनता दरबार। इससे बौखलाये-तंग आये कमेरों ने वापिस लौट कर श्रीमान् जी की हल्के में उपस्थिति के समय ही 26 सितम्बर को पुनः अपने हाथों से बनाई खानों पर कब्जा कर पत्थर तोड़ने के कार्य को आरम्भ किया। उन्होंने सभी आदेशों की अवहेलना कर अपना कब्जा कायम किया है। दूसरी तरफ 29 सितम्बर को न्यायालय को प्रशासन द्वारा रिपोर्ट देना है कि ठेकेदारों का कब्जा कायम कर दिया है।

7 सितम्बर के खूनी संघर्ष में मजदूरों ने जो हिम्मत दिखाई उसकी मिसाल नहीं मिलेगी लेकिन बिचौलिये हैं कि मारी गई शिकार के स्वयं मालिक बन जाते हैं और साथ लग लेते हैं हार खाये नेतागण। आज उन्होंने मजदूरों की नकेल को थाम लिया है। गिनिज बुक में नाम दर्ज करवाने की उनकी होड़ लगी है कि पो-बारह किसके रहें। इस बात को न समझ कर मजदूर आँखों पर धोखे की पट्टी बाँधे हैं। संघर्ष जारी है....

28.9.97 —एक अध्यापक

फ्री क्यों ?

आपसी बातचीत में हमें यह अक्सर महसूस होता है कि हमारे सब रिश्तों में पैसे ने तहलका मचा रखा है। दोस्तों के बीच रिश्ते, पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध, भाई-बहन के रिश्ते, प्रेम के रिश्ते, पीढियों के सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष के रिश्ते, मनुष्य-मनुष्य के बीच के सम्बन्ध, सब मानवों के बीच रिश्ते, मनुष्य व प्रकृति के बीच सम्बन्ध पैसों के भंवरजाल में जकड़े हैं।

ऐसे माहौल में नये रिश्तों की उम्मीद लिये हम प्रयास कर रहे हैं। नये रिश्तों में रुपये-पैसे, ऊँच-नीच,रौब-दाब के लिये कोई जगह नहीं हो ऐसी हमारी कोशिश है। इसलिये हम कुछ लोग मिल कर अपने साधनों को जोड़ कर यह अखबार निकाल रहे हैं और सड़कों पर खड़े हो कर बाँट रहे हैं।

अखबार को फ्री बाँटते हुये हमें चार साल ही हुये हैं। इस दौरान हौसला बढाने वाले जो भाव-रुख हमने देखे हैं उनसे मनुष्यों के बीच नये रिश्तों की सम्भावना में हमारा भरोसा बहुत बढा है।

★ **आटोपिन फैक्ट्री** के एक मजदूर ने 17 अक्टूबर को कहा : "माल नहीं होता तब मजदूरों से कहते हैं कि फार्म भर कर छुट्टी कर लो और फार्म पर 'जरूरी काम है' लिखो। कोई एतराज करता है तो कहते हैं कि यह साला लीडरी कर रहा है, मार भगाओ इसे। इस्तीफा लिखवा कर निकाल देते हैं। कोई कानून नहीं है। चार घन्टे ड्युटी के बाद काम नहीं होने पर आधे दिन की एबसेन्ट लगा देते हैं और गेट बाहर कर देते हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु गार्डन, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।